Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2022 GISRRJ | Volume 5 | Issue 6 | ISSN : 2582-0095

नैतिक मूल्य के परिप्रेक्ष्य में औपनिषद शिक्षा दर्शन की उपादेयता

डॉ0 ज्योति कपूर
एसोसिएट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग
सदनलाल सांवलदास खन्ना महिला, महाविद्यालय,
इलाहाबाद, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश।

Article Info
Volume 5, Issue 6
Page Number : 40-43

Publication Issue :
November-December-2022

Article History
Accepted : 01 Dec 2022
Published : 20 Dec 2022

शोधसारांश– उपनिषदों की शिक्षा के उत्कृष्ट नैतिक सिद्धान्त अनुकरणीय है। नैतिक शिक्षा से सम्बन्धित कठिनाइयों का समाधान उपनिषदों के मौलिक तथा प्राचीन व्यापक दृष्टिकोण को अपनाकर ही किया जा सकता है। उपनिषदों की श्रेष्ठ विचारों की संकल्पना से सम्पूर्ण मानवता का हित निहित है। संस्कृति किसी जाति, समाज और राष्ट्र की जीवनी शक्ति होती है। हमारी संस्कृति में कुछ ऐसे अमर तत्व है जिनके कारण यह आज भी जीवित है। वे तत्व है–आध्यात्म भावना, समन्वय की भावना, पुरूषार्थ की प्राप्ति, त्याग व भोग का संतुलन, कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन, ब्रह्मचर्येण तपसा देव मृत्युभुपाध्नत, मातृ देवो भव, पितृ देवो भव, आचार्य देवो भव, सा विद्या या विभुक्तये, अतिथि देवो भव, आदि। उपनिषदों के अद्वैत चिन्तन ने जहाँ एक ओर ''सर्वे भवन्तु सुखिनः'' तथा ''सर्वभूतहिते रताः'' की कल्याणकारी उदात्त भावना को जाग्रत किया, वहीं दूसरी और ''वसुधैव कुटुम्बकम'' की दिव्य परिकल्पना को भी जन्म दिया। इस प्रकार उपनिषदों में सर्वत्र नैतिक शिक्षा सम्बन्धी विचार विद्यमान है, उनको शिक्षा में महत्वपूर्ण स्थान प्रदान कर समाज में व्याप्त नैतिकता के पतन को रोकना राष्ट्र की प्रगति के लिये आवश्यक है। अतः निःसंदेह नैतिक शिक्षा के लिये औपनिषद शिक्षा दर्शन की उपादेयता अद्यावधि प्रासंगिक तथा अनुकरणीय है।

मुख्य शब्द– नैतिक, मूल्य, औपनिषद, शिक्षा, दर्शन, मौलिक, व्यापक, संस्कृति।

उपनिषदों की शिक्षा के उत्कृष्ट नैतिक सिद्धान्त अनुकरणीय है। नैतिक शिक्षा से सम्बन्धित कठिनाइयों का समाधान उपनिषदों के मौलिक तथा प्राचीन व्यापक दृष्टिकोण को अपनाकर ही किया जा सकता है। कठोपनिषद में निरुपित वर्णनानुसार– जो दुश्चरित है, अथवा दुर्नीति से विरत नहीं है, जिनका तन असंयत है, वह अपने विशुद्धरूप को अथवा परमात्मा को प्राप्त नहीं कर सकता। जीवन के चरमलक्ष्य की प्राप्ति के लिये मनुष्य को दृष्प्रवृत्तियों पर विजय प्राप्त करना परमावश्यक है। नैतिक आदर्शो का अनुसरण ही विशुद्ध सत्वता का एकमात्र साधन है। उपनिषदों की श्रेष्ठ विचारों की संकल्पना से सम्पूर्ण मानवता का हित निहित है।

भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता जिन आधार स्तंभो पर स्थित है उसका मुख्य सूत्र उपनिषदों में उपलब्ध है। उपनिषदों में ऐसे मूल तत्व विद्यमान है जिन्होनें हमारे जीवन की चिंतनधारा को विस्तार और ऊँचाई प्रदान की है। जब जब सांसरिकता में रहकर हमारा संतुलन असंतुलित हुआ है या अस्थिर हुआ है तब उपनिषदों की सार्वभौमिक शिक्षा ने हमें असंतुलित होने से बचाया है। संस्कृति किसी जाति, समाज और राष्ट्र की जीवनी शक्ति होती है। समाज के ''मानसिक गुण'' जो उसके आचार–विचार कला–कौशल, सभ्यता, ज्ञान विज्ञान आदि में प्रकट होते है–उस समाज की संस्कृति कहलाते हैं। संस्कृति के इस अभिप्राय के चिन्तन से यह स्पष्ट हो जाता है कि हमारी संस्कृति में कुछ ऐसे अमर तत्व है जिनके कारण यह आज भी जीवित है। वे तत्व है–आध्यात्म भावना, समन्वय की

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

भावना, पुरूषार्थ की प्राप्ति, त्याग व भोग का संतुलन, कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन, ब्रह्मचर्येण तपसा देव मृत्युभुपाध्नत, मातृ देवो भव, पितृ देवो भव, आचार्य देवो भव, सा विद्या या विभुक्तये, अतिथि देवो भव, आदि।

वर्तमान युग में भारतीय दर्शन के माध्यम से समाज में एकता एवं समरसता ला सकते हैं, किन्तु आज समाज में इतनी विषमता का वातावरण व्याप्त है कि जिसके कारण समाज में समरसता लाना अत्यन्त दुष्कर कार्य हो गया है। यदि विज्ञान के साथ–साथ व्यक्तियों में कहीं आध्यात्मिक ज्ञान विकसित हो जाय, तो आज समाज से जातिवाद, भष्टाचार, कुरीतियों, व्यभिचार का अन्त हो जायेगा। नवीन चिन्ता से सकारात्मक कार्य और सकारात्मक कार्य से हमारे समाज का समुचित विकास होगा।

उपनिषदों के अद्वैत चिन्तन ने जहाँ एक ओर ''सर्वे भवन्तु सुखिनः'' तथा ''सर्वभूतहिते रताः'' की कल्याणकारी उदात्त भावना को जाग्रत किया, वहीं दूसरी और ''वसुधैव कुटुम्बकम'' की दिव्य परिकल्पना को भी जन्म दिया। सभी सुखी हो, आनन्द व समृद्धि सभी को प्राप्त हो, सभी का विवेक जागृत हो, सभी हर दृष्टि से स्वस्थ हो। ''सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु'' का भाव सर्वत्र हो। मा विद्विषावहै1 तथा ततो न विजुगुप्सते की भावना सर्वत्र विद्यमान रहे। उपनिषद हमें सदैव सत्कर्म करने के लिये प्रेरित करती है। क्योंकि निष्काम भाव से सत्कर्म करने से3 मानव जन्म–मरण के चक्र से त्रस्त नहीं होता है। यह संसार कर्मभूमि है और मानवमात्र एक रंगमंच के पात्र के समान है। उसकी पात्रता तभी श्रेष्ठ है जब वह श्रेष्ठ कर्म करें और अपने नैतिक मूल्यों के प्रति सजग रहें। अतः उपनिषदों में निहित नैतिक मूल्य इतने दिव्य है कि यदि मानव अपने जीवन में अवतरित कर सके तो शाश्वत सुख और चिरस्थायी शान्ति प्राप्त कर सकता है। नैतिक तत्वों का उदय भी उपनिषदों की एक अपनी विशेषता हैं। तैत्तिरीय उपनिषद में गुरू शिष्य को अतीव मार्मिक शिक्षा देता है। यह नैतिकता की चरम सीमा का उपदेश है– सत्य बोलो[4] धर्म का आचरण करो, स्वाध्याय से प्रमाद न करो, इस प्रकार के नैतिक उपदेश है जो समाज एवं धर्म के लिये नितान्त उपयोगी सिद्ध हुए हैं। कठोपनिषद में वर्णित सतगुरू और सुशिष्य अपने समाज, ज्ञान–दर्शन विज्ञान आदि की साथ–साथ रक्षा करें।[5]

ओऽम सह नाववतु। सह नौ भुनक्तु सह वीर्यं करवावहै।

तेजस्वि नावधीतमस्तु मा विद्विषावहै। ओऽम शान्तिः। शान्तिः। शान्तिः।

सह–अस्तित्वाद की इसी भावना का समर्थन प्रश्नोपनिषद में किया गया है।[6] उपनिषदों में प्रत्येक शुभ कर्मो के लिये स्वस्ति वाचन का पाठ किया जाता है। हम कानों से कल्याणकारी वचन सुनें, आँखो से कल्याणकारी दृश्य देखें तथा ह्रष्ट–पुष्ट अंगो वाले शरीरों से युक्त होकर परमात्मा की स्तुति करते हुए देवों, विद्वानों तथा सभी बड़ों और छोटों सा हित करते हुए अपनी सम्पूर्ण आयु का उपभोग करें। जीवन को पूर्ण संयत तथा सभ्य बनाने हेतु शिक्षा के महत्व पर बल देना उदात्त नैतिक मूल्यों के अन्तर्गत ही सम्भव है क्योंकि शिक्षा मनुष्यों में पशुता का बहिष्कार कर मनुष्यों के गुणों को उभारती तथा सींचती है। कठोपनिषद में वर्णित[7] उठो जागो और बड़ों से गुरूओं की शिक्षा ग्रहण करो। क्योंकि शिक्षित व्यक्ति ही सुन्दर समाज का निर्माण कर सकता है।

सर्व कल्याण की आधार शिला है एक ही आत्मा का सर्वव्यापी होना। वस्तुतः जिस मनुष्य की दृष्टि आत्मवत सर्वभुतेषु होती है वह समाज के प्रति अपने दायित्व का निर्वाह पूर्ण निष्ठा के साथ करता है। ईशावास्योपनिषद में भी सामाजिक समरसता का अतीव सजगता के साथ वर्णन है[8] प्रज्ञावान सब प्राणियों को अपने में ही देखता है तथा सब प्राणियों में अपनी ही आत्मा देखता है। वह किसी से घृणा नहीं करता।[9] ईशोपनिषद के ये दोनों मंत्र सर्वोच्च आध्यात्मिकता का संदेश देते है। यही सर्वोच्च दर्शन है और यही चरित्र तथा लोक कल्याण की सर्वोच्च कसौटी है। इस अनुभूति के द्वारा ही मनुष्य सबके साथ अपने मूलभूत एकता का अनुभव करता है और इसके द्वारा ही वह अपने जीवन की पूर्णता तक पहुँच कर विश्वप्रेम और लोककल्याण की ओर प्रवृत्त होता है।

यज्ञ, जप, तप, दया, दान, दमन, सत्य परोपकार विश्व–वन्धुत्व की भावना आदि नैतिक मूल्य उपनिषदों में स्थान स्थान पर प्राप्त होते है किन्तु इन सबको स्वयं में समाहित करने हेतु अकर्मण्यता के मार्ग का परित्याग कर

निष्काम कर्म के मार्ग का अनुसरण करना होगा। जो अपने पराये की भावना से रहित हो, क्योंकि इसी के द्वारा स्वयं की उन्नति के साथ–साथ समाज की उन्नति भी होगी।

मनुष्य की स्वार्थपरता और शोषक वृत्ति सर्वदा समाज के लिये घातक रही है। ईशावास्योपनिषद में10 ''तेन त्यक्तेन भुंजीथा मा गृधः कस्य स्विद् धनम्'' कहकर त्यागपूर्वक सांसारिक वस्तुओं को ग्रहण करने तथा आत्मस्वरूप को पहचानते हुए सबके लिये प्रेम और सेवा का भाव अपने अन्दर लाने का उपदेश दिया है। ''मा गृधः कस्यास्विद्धनम्'', ''स्वधया परिहिता'' का उपदेश देता हुआ मानव मात्र को अशान्ति से शान्ति की ओर ले जाने का यत्न करता है। ''तेन त्यक्तेन भुंजीथा'' की उदात्त भावना ने मानव कल्याण ही नहीं अपितु विश्व कल्याण का भी मार्ग प्रशस्त किया है। कर्मशील रहते हुए सौ वर्ष जीवन की कामना का वर्णन ईशोपनिषद में वर्णित है।[11]

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषच्छतं समा।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे।।

अर्थात कर्मवाद मानव को कर्मण्यता तथा आशावाद का सन्देश देता है। यह कर्म ही जीवन है।

विश्व–वन्धुत्व की भावना का भी अपना महत्वपूर्ण स्थान है। इसी आधार पर ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' तथा ''आत्मव्रत सर्वभूतेषु'' की भावना परवर्ती काल में पल्लवित हुई। विश्व–वन्धुत्व की उदात्त कमनीय भावना का निदर्शन'', ''मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे। मित्रस्य चक्षुषा समीक्षाम्''[12] मंत्र में प्राप्त होता है।

साम्यवाद की उदात्त भावना निदर्शन ''संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्। देवा भागं यथापूर्वे संजानानामुपासते।[13]

विश्व कल्याण की कामना ही इस संस्कृति का मूल मंत्र है।[14] प्राचीनकाल में ''सत्यं शिव सुन्दरम'' के अनुसार विश्व की कल्याण कामना ही वैदिक संस्कृति का प्रयोजन था। उसकी सिद्धि के लिये एहिक एवं परलौकिक उन्नति करते हुए ब्रह्म के स्वरूप में भारतीय निमग्न हो जाते थे। वह ब्रह्म तप से प्राप्त होता था। ''ब्रह्म तल्लक्ष्यमुच्यते'' ''तपसा चीयते ब्रह्म'' तथा तप की कसौटी के रूप में यम–नियमों का पालन करने के लिये एक निर्देश प्रत्येक विद्यार्थी को दिया जाता था साथ ही मानव मात्र को इनका पालन करना आवश्यक था। यम के अन्तर्गत[15] ''तत्राहिसां सत्यास्तेय ब्रह्मचर्या परिग्रहा यमाः तथा नियमों में शौच सन्तोषस्तपः स्वाध्यायेश्वर प्राणिधानानि नियमाः'' अर्थात अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह तथा मन वचन कर्म में पवित्रता, शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्राणिधान। इन यम एवं नियमों की उपयोगिता, महत्व एवं अनिवार्यता के विषय में कुछ कहना उचित न होगा। ये मानव को पूर्ण बनाने के साधन थे।

आधुनिक समाज किंकर्त्तव्यविमूढ़ की अवस्था में है। उसे प्राचीन भारतीय संस्कृति के आदर्शों को अपनाना चाहिये ताकि मानव सुख–शान्ति व आनन्द के साथ भय रहित जीवन जी सके। भारतीय दर्शन के श्रेष्ठ विचारों को अपना कर आधुनिक समाज पुनः प्रतिष्ठित हो सकता है क्योंकि जैसा विचार वैसा आचार। भारतीय संस्कृति का यह अमृतमय संदेश हमें आधुनिक समाज में इसकी उपादेयता सिद्ध कर देता है।

सन्दर्भ सूची–

1. कठोपनिषद मंगलाचरण
2. ईशोपनिषद, 6
3. ईशावास्योपनिषद–1/2
4. सत्यं वद/धर्म चर/स्वाध्यायान्मा प्रमदः। ..... भिया देयम्। संविदा देयम। तैतिरीयोपनिषद–11
5. कठोपनिषद–मंगलाचरण
6. ओऽम् भद्रं कर्णेभिः श्रुणुयाम देवाः भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
   स्थिरैरैस्तुष्टुवाँ सस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः।

स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वास्ति न पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति न तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।।
ओऽम शान्तिः। शान्तिः। शान्तिः। प्रश्नोपनिषद् शान्तिपाठ।

7. उतिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधयत– कठोपनिषद– 1/3/14
8. यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्येवानु पश्यति।
सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न विजुगुप्सते।। ईशोपनिषद–6
9. यस्मिन सर्वाणि भूतान्यत्मैवामूद विजानतः ।
तत्र को मोहः कः शोक एकत्वमनुपश्यत।। ईशोपनिषद –7
10. ईशावास्योपनिषद्–1
11. ईशोपनिषद –1/2
12. यजु0 36.18
13. ऋग्वेद –10/191/2
14. सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग भवेत्।। छान्दोग्योपनिषद–7.23–2
15. योगदर्शन–2/30